Don't write here

Don't write here

2. **सामाजिक वर्ग :** समाज में पुरोहित, व्यापारी, अधिकारी, सैनिक तथा शिल्पी प्रमुख वर्ग तथा कृषक, कुम्भकार, बढ़ई, नाविक कम महत्वपूर्ण वर्ग भी थे। पुरोहित लोग दुर्ग के उपरी भाग में रहते थे नगर क्षेत्र में व्यापारी, अधिकारी, सैनिक एवं शिल्पी रहते थे।
3. **मातृप्रधान समाज :** यह समाज एक मातृप्रधान समाज माना जाता है। इसका प्रमाण यह है कि खुदाई में सबसे अधिक नारी मृण्मूर्तियां मिलि।
4. **खान-पान :** सिन्धु सभ्यता के निवासी शाकाहारी तथा माँसाहारी दोनों ही थे।
5. **अन्य सामाजिक व्यवहार :** सिन्धु घाटी के निवासी खाने-पीने के साथ वस्त्र एवं आभूषण के भी शौकीन थे। आभूषण सोने, चाँदी और माणिक्य के बनाये जाते थे। समाज में गरीब तथा अमीर वर्ग विद्यमान थे।

सैन्धव सभ्यता का आर्थिक जीवन

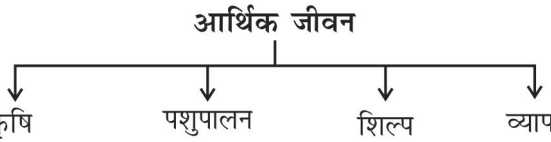

सैन्धव सभ्यता का आर्थिक जीवन अत्यन्त विकसित अवस्था में था। आर्थिक जीवन के प्रमुख आधार कृषि, पशुपालन, शिल्प और व्यापार थे।

- **कृषि :** सैन्धव वासी वर्ष में एक बार ही कृषि करते थे। उन्हें नौ फसलों (गेहूँ, जौ, कपास, खजूर, तरबूज, मटर, राई, सरसों और तिल) का ज्ञान था। कपास सैन्धव लोगों की मूल फलस थी।
- **पशुपालन :** हड़प्पाई लोग पशुपालन भी करते थे। उन्हें बैल, गाय, भैंस, बकरी, भेड़, सुअर, कुत्ते आदि का ज्ञान था।
- **शिल्प एवं उद्योग धन्धे :** हड़प्पा सभ्यता का सबसे प्रमुख उद्योग वस्त्र उद्योग था। सूत की कताई और सूती वस्त्रों की बुनाई के धन्धे अत्यन्त विकसित थे। हड़प्पा सभ्यता के लोग काँसे के निर्माण तथा प्रयोग से परिचित थे। हड़प्पा सभ्यता में स्थापत्य महत्वपूर्ण शिल्प था। इस सभ्यता का मुख्य आधार कृषि तथा व्यापार था।
- **व्यापार और वाणिज्य :** सिन्धु सभ्यता के लोगों में व्यापार और वाणिज्य का बड़ा महत्व था। इस सभ्यता के लोग पत्थर, धातु, हड्डी का व्यापार करते थे।

निष्कर्ष: समग्र अध्ययन करने पर यह पता चलता है सैन्धव सभ्यता के लोग एक उच्च सामाजिक जीवन जी रहे थे तथा उनकी अर्थव्यवस्था भी फल-फूल रही थी।

प्रश्न 12. विदेशी व्यापार में पतन के बाद भी गुप्तकाल भारतीय इतिहास में स्वर्ण युग के नाम से विख्यात है। परीक्षण कीजिए।

उत्तर:

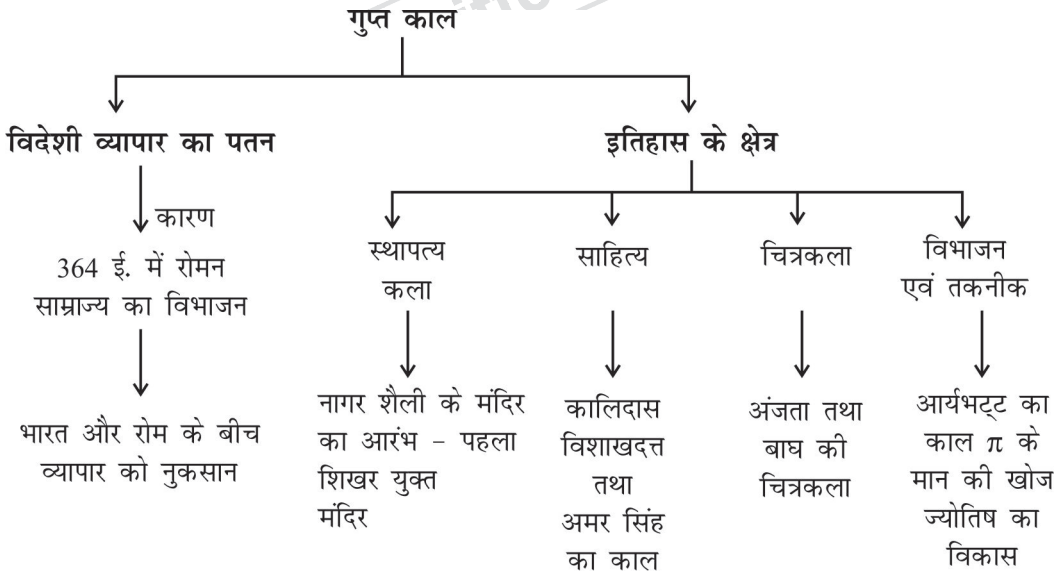

प्राचीन भारत में गुप्त वंश, मौर्य वंश के बाद आने वाला दूसरा महत्वपूर्ण वंश था। गुप्त वंश के समय ही विदेशी व्यापार को रोमन साम्राज्य के दो भागों में विभाजन से नुकसान हुआ परंतु इस काल में ही संस्कृति व विज्ञान के क्षेत्र में भारत में अभूतपूर्व प्रगति हुई।